

हेडगेवार जी ने सुप्त हिंदुत्व को जगाने के लिए विजयादशमी को एक नया अर्थ दिया



विजयदशमी कई कारणों से मनाई जाती है। कहा जाता है कि इस दिन भगवान रामचंद्र ने रावण का वध किया था और विजय प्राप्त की थी। पर्यावरण की दृष्टि से, विजयादशमी नई फसल के मौसम की शुरुआत भी दर्शाता है। लोग भरपूर फसल, शांति और समृद्धि के लिए धरती माता का आशीर्वाद चाहते हैं। यह विजय और वीरता का पर्व है।

पिछली शताब्दी में, “भारतवर्ष” के लिए सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक डॉक्टर केशव हेडगेवार जी द्वारा आरएसएस की स्थापना थी। आरएसएस की स्थापना 1925 में विजयादशमी के दिन हुई थी। वीर सावरकर श्री राम और श्री कृष्ण के लिए बहुत सम्मान रखते थे। वह कहते थे कि दोनों सेना प्रमुख और देश के सर्वोच्च नेता थे। उन्होंने 1909 में लंदन में विजय-दशमी मनाई। रामचंद्र के काम के बारे में उन्होंने कहा, “जब प्रभु श्री राम ने अपने पिता के वचन का पालन करने के लिए अपने राज्य को छोड़ दिया, लेकिन मुख्य रूप से राक्षसों के उन्मूलन करना मकसद था, उन्होंने बहुत अच्छा काम किया।” जब श्री राम ने लंका पर आक्रमण किया और रावण वध की अपरिहार्य और धर्मी लड़ाई की तैयारी की, तो उनका कार्य श्रेष्ठ था। वैसे ही संघ पश्चिमी और मुगल आक्रमणकारियों द्वारा बड़ी संख्या में ब्रेनवॉश किए गए लोगों की राक्षसी विचार प्रक्रियाओं को बदलने के लिए भी काम कर रहा है।

संघ के द्वितीय सरसंघचालक गोलवलकर गुरुजी के अनुसार, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मिशन, “सभी के लिए सार्वभौमिकता और शांति और समृद्धि पर आधारित भारतीय मूल्य प्रणाली का पुनरोद्धार है।” संगठन की विचारधाराओं में से एक “वसुधैव कुटुम्बकम्” है, जो प्राचीन भारतीय ऋषि की विश्वदृष्टि है कि पूरी दुनिया एक परिवार है।

अपनी स्थापना के बाद से, संघ के काम को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है ; यह तब शुरू हुआ जब हम ब्रिटिश शासन के अधीन थे, और ब्रिटिश शासन से मुक्ति उनमें से एक थी ; हालांकि, गहरी सांस्कृतिक जड़ों और एक लंबे इतिहास के साथ इस महान राष्ट्र की महिमा को बहाल करने के लिए डॉ हेडगेवारजी का दीर्घकालिक दृष्टिकोण था। उन्होंने महसूस किया कि सबसे महत्वपूर्ण कार्य प्रत्येक व्यक्ति की गुलामी मानसिकता को बदलना और “राष्ट्र पहले” में विश्वास करने वाले चरित्र को विकसित करना था, जो राष्ट्र की भलाई के लिए महान सनातन संस्कृति के मार्ग पर चलता है, और इसके मूल में सामाजिक समानता के साथ हिंदुओं को एकजुट करता है, ताकि विश्व को मानवता के पथ पर अग्रसर किया जा सके।

समाज और राष्ट्र पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए प्रत्येक व्यक्ति में परिवर्तन को प्रभावित करने के लिए आरएसएस निम्नलिखित श्लोक के अनुसार काम कर रहा है।

सत्यं रूपं श्रुतं विद्या कौल्यं शीलं बलं धनम् ।

शौर्यं च चित्रभाष्यं च दशमे स्वर्गयोनयः ॥

सत्य, महिमा, शास्त्रों का ज्ञान, विद्या, कुलीनता, विनय, बल, धन, वीरता और वाक्पटुता ये दस लक्षण स्वर्ग मार्ग के हैं।

संघ “संगठन मंत्र” में विश्वास करता है

समानी व : आकृति ;,

समाना : हृदयानि व :।

समानमस्तु वो मनो,

यथा व : सुसहासति ॥

-ऋग्वेद :

हमारे उद्देश्यों को एकजुट होने दें, हमारी भावनाओं में सामंजस्य हो, और हमारे मन मस्तीष्क को सही दिशा में काम करने के लिए प्रवृत्त किया जाए, जैसे ब्रह्मांड के सभी पहलू एक साथ और संपूर्णता में मौजूद होते हैं !!!

संघ में किसी के प्रति या किसी धर्म के प्रति कोई दुर्भावना नहीं है। दूसरी ओर, संघ उपरोक्त बिंदुओं के लिए काम करने में विश्वास करता है, और जब वह सफल हो रहा है, तो जो लोग सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक रूप से एक मजबूत भारत को देखना नहीं चाहते, जिस कारण से देश को उसके उच्चतम गौरव तक ले जाया जा सके और दुनिया को परिवार के मुखिया के रूप में नेतृत्व किया जा सके, संघ को गाली देने वाले नामों से पुकारते हैं, विनाशकारी सोच के साथ आलोचना करते हैं, और संगठन को बदनाम करने और प्रतिबंधित करने के लिए गंदी चालों में लिप्त हैं। स्वयंसेवकों का लचीलापन, दृढ़ता, समर्पण, और भारत माता और उनके काम के लिए प्यार कम नहीं हुआ है, भले ही कई मारे गए, पीटे गए, प्रताड़ित किए गए, कैद किए गए, प्रतिबंधित किए गए और विनाशकारी रूप से आलोचना की गई।

बहुत से लोग आश्चर्य करते हैं कि संघ हिंदुत्व के लिए समर्पित क्यों है। इसमें कुछ भी गलत नहीं है क्योंकि यह सभी की भलाई और समृद्धि के लिए है, क्योंकि यह राष्ट्रीयता का पर्याय है, जिसमें सभी पंथ और धर्म शामिल हैं।

सामाजिक समानता

आरएसएस के संस्थापक डॉ. हेडगेवार जी का सामाजिक असमानता पर एक अनूठा दृष्टिकोण था। जब भी यह विषय आता, तो वे कहते, “मुसलमानों और यूरोपीय लोगों को हमारे पतन के लिए दोषी ठहराकर, हम खुद को जिम्मेदारी से मुक्त नहीं कर सकते। हमें अपने आप में खामियों की तलाश करनी चाहिए।” हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि हमारे बीच सामाजिक असमानता ने हमारे पतन में योगदान दिया है। जाति और उप-जाति प्रतिद्वंद्विता, साथ ही अस्पृश्यता, सभी सामाजिक असमानता की अभिव्यक्तियाँ रही हैं। हमारी सामाजिक असमानता का सबसे दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण पहलू अस्पृश्यता है। कुछ का मानना है कि यह अतीत में अस्तित्वहीन था, लेकिन इसने हमारी सामाजिक व्यवस्था में घुसपैठ की और किसी बिंदु पर जड़ें जमा लीं। इसका मूल जो भी हो, हम सभी इस बात से सहमत हो सकते हैं कि अस्पृश्यता एक बड़ी घिनौनी सोच है जिसे त्याग दिया जाना चाहिए। कोई

विरोधी तर्क नहीं हैं। “अगर गुलामी गलत नहीं है, तो कुछ भी गलत नहीं है,” अमेरिका में गुलामी को खत्म करने वाले व्यक्ति अब्राहम लिंकन ने एक बार कहा था। इसी तरह, हम सभी को घोषित करना चाहिए, “अगर अस्पृश्यता गलत नहीं है, तो दुनिया में कुछ भी गलत नहीं है!” परिणामस्वरूप, हममें से प्रत्येक को सामाजिक असमानता को उसके सभी रूपों में समाप्त करने का प्रयास करना चाहिए। संघ और उसके संगठनों को असमानता की खाई को पाटने में बड़ी सफलता मिली है और वे निरंतर इस पर काम कर रहे हैं। ऐसा ही एक उदाहरण वनवासी कल्याण आश्रम और सामाजिक समरसता विभाग है।

स्वयंसेवकों का विकास करना

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विचारों और आदर्शों को स्थापित करने के लिए सिर्फ एक स्कूल से भी अधिक है। यह एक चरित्र विकास स्कूल है जो जमीनी स्तर पर कार्य करने पर जोर देता है। स्वयंसेवकों को शिविरों की एक श्रृंखला में प्रशिक्षित किया जाता है जहां उन्हें गीतों के माध्यम से मातृभूमि सेवा के लिए आदतों और प्रेरणा के साथ, आम जीवन में भागीदारी, इतिहास और राष्ट्रीय आदर्शों और नायकों पर चर्चा, ड्रिल और शारीरिक व्यायाम, जरूरतमंदों की सहायता करने के लिए प्रेरित किया जाता है। कठिन और आपातकालीन स्थितियों, विभिन्न सामाजिक और राष्ट्रीय मुद्दों पर काम करना और उन्हें हल करना आदि। उदाहरण द्वारा नेतृत्व करने का मूल्य पूरी तरह से दिखाई देता है।

शाखाओं में स्वयंसेवकों की दैनिक बैठकें, राष्ट्रीय त्योहारों पर बड़ी सभाएँ और नायकों के दिनों का उत्सव, साथ ही व्याख्यान और प्रदर्शन और अन्य तरीके, साहस, अनुशासन, समाज की सेवा की भावना, बड़ों और विद्वानों के लिए सम्मान इन सबकी शिक्षा मिलती हैं। यह भारतीय संस्कृति के आजमाए हुए और सच्चे आदर्शों और प्रथाओं के अनुसार देश के युवाओं को शिक्षित करने की एक अनूठी प्रणाली है।

सही विमर्श सेट करना

भारतीय संस्कृति और ज्ञान से नफरत करने वाले महान सनातन संस्कृति, उसकी प्रथाओं, महान स्वतंत्रता सेनानियों, जाति-आधारित भेदभाव और आरएसएस जैसे संगठनों के प्रति घृणा का माहौल और मानसिकता पैदा करने के लिए एक अपमानजनक और झुठी कथा का निर्माण करते हैं। ऐसा ही एक उदाहरण है...हमारे समाज का एक लंबा और प्रतिष्ठित इतिहास है। सदियों से विचार और कर्म की पूर्ण स्वतंत्रता रही है। परिणामस्वरूप, हमारे ग्रंथों में बहुत सी ऐसी बातें लिखी गईं जिनका गलत अर्थ निकाला जा सकता था। यदि कहावत “न स्त्री स्वातंत्र्यमराहति” (स्त्री स्वतंत्रता के योग्य नहीं है) का अर्थ है कि इस समाज में महिलाओं को तिरस्कृत किया जाता था, लेकिन यह कहावत “यात्रा नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः” (जहां महिलाओं की पूजा की जाती है, देवता आनन्दित होते हैं) का अर्थ है कि महिलाएं पूजनीय होती हैं। यदि कोई सामाजिक एकता और सद्भाव स्थापित करना चाहता है, तो हमें विचार करना चाहिए कि हमारे धार्मिक ग्रंथों और इतिहास से किन अवधारणाओं को लिया जाना चाहिए ताकि असमानताओं को दूर किया जा सके और हिंदू समाज को मजबूत किया जा सके।

स्वामी विवेकानंद के सिद्धांतों का पालन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ करते आ रहा है। स्वामी विवेकानंद की दृष्टि राष्ट्र की महिमा को बहाल करना था, और उन्होंने हमारे युवाओं में भारतीय आत्मनिर्भरता में विश्वास पैदा करने के लिए एक मजबूत सांस्कृतिक और धार्मिक नींव के साथ कई पहलुओं पर जोर दिया। आरएसएस न केवल भारतीय आत्मनिर्भरता स्व में विश्वास रखता है, बल्कि यह युवाओं के साथ

जमीनी स्तर पर काम कर रहा है, उद्योगपतियों को प्रोत्साहित कर रहा है और भारतीय आत्मनिर्भरता पर अधिक ध्यान केंद्रित करने के लिए सरकारों के साथ जुड़ रहा है। खेल से लेकर औद्योगिक विकास से लेकर आध्यात्मिकता तक सभी क्षेत्रों में विकास के लिए आरएसएस का बहुआयामी कार्य सराहनीय है और इसकी जड़ें भारतीय हैं।

यदि आप वास्तव में संघ को जानना चाहते हैं, तो कुछ महीनों या एक वर्ष के लिए इसमें शामिल हों। मीडिया द्वारा बनाई गई छवि फीकी पड़ जाएगी, और वास्तविकता सामने आएगी, जो लोगों को समाज और राष्ट्र के लिए जोश के साथ काम करने के लिए प्रेरित करेगी।



(लेखक राष्ट्रवादी विषयों पर शोधपूर्ण लेख लिखते हैं व इनकी कई पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं)